# [ संस्कृत व्याकरण ]

## [ विभक्ति या कारक ]

**कारक**: क्रिया के साथ जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं, कारक के छह भेद हैं - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण क्रिया के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रहने के कारण सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं कहलाते हैं।

जैसे,

किसी न किसी रूप में क्रिया के सम्पादक तत्व को कारक कहते हैं इसलिए प्रत्येक कारक का क्रिया के साथ सम्बन्ध अवश्य रहता है।

1. छात्रः पठति (कर्ता कारक) ने
2. छात्रः संस्कृत पठति (कर्म कारक) को
3. छात्रः संस्कृत मनसा पठति (करण कारक) से
4. छात्रः संस्कृत ज्ञानाय पठति (सम्प्रदान कारक)
5. छात्रः संस्कृतम् आचार्यात् पठति (अपादान कारक)
6. छात्रः संस्कृत विद्यालये पठति (अधिकरण कारक)

1) **कर्ता कारक** -> क्रिया करने वाले को कर्ता कहते हैं। कर्तृवाच्य के कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति होती है, यथा- रामः खादति (राम खाता है) यहाँ 'खादति' क्रिया का सम्पादक 'रामः' है, इसलिए रामः कर्ता हुआ और उसमें प्रथमा विभक्ति हुई, ऐसे ही - श्यामा पठति, राधा गच्छति आदि में समझना चाहिए, सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है, जैसे - हे राम, हे राधा,

## प्रथमा विभक्ति :-

1. कर्ता में - शिशु: रोदिति ।
2. कर्मवाच्य के कर्म में - वटुभि: पठ्यते वेद: ।
3. सम्बोधन में - हे मात: ।

2) कर्मकारक :- क्रिया का फल जिसपर पड़े उसे कर्मकारक कहते हैं, कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है, यथा - बालक: दुग्धं पिबति (बच्चा दूध पीता है) यहाँ 'पिबति' क्रिया का फल दूध है, इसलिए 'दुग्ध' कर्मकारक हुआ और उसमें द्वितीया विभक्ति हुई, ऐसे ही 'स: चन्द्रं पश्यति', 'बालिका भक्तं खादति' आदि वाक्यों में समझना चाहिए ।

## द्वितीया विभक्ति :-

1. कर्म में - बालक: ग्रन्थं पठति ।
2. प्रति के साथ - दीनं प्रति दया कुरु ।

3. करण कारक :- क्रिया करने में जो अत्यन्त सहायक हो उसे करणकारक कहते हैं । करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है, यथा - स: कलमेन लिखति (वह कलम से लिखता है) यहाँ 'लिखति' क्रिया का अत्यन्त सहायक कलम है इसीलिए यह करणकारक हुआ और इसमें तृतीया विभक्ति हुई

सह, साकम्, सार्द्धम् (साथ) इत्यादि शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है ।

यथा:-

पुत्रेण सह पिता आगच्छति (पुत्र के साथ पिता आता है) मया साकं स गमिष्यति (मेरे साथ वह जाएगा) यहाँ 'सह' का योग रहने के कारण 'पुत्रेण' और 'मया' में तृतीया विभक्ति हुई।

तृतीया विभक्ति :-

1. करण में - सः लेखन्या लिखति।
2. कर्मवाच्य के कर्ता में - रामेण रावणः हतः।
3. स्वाभावादि अर्थों में - लक्ष्मणः प्रकृत्या कोपी।
4. सह, साकं, सार्धं के साथ - नद्याः प्रवाहेण सह नौका गच्छति।
5. बिना के साथ - जलेन बिना जीवनं नास्ति।
6. विकृत अंग में - पादेन खञ्जः।

4. सम्प्रदान कारक :- जिसको दिया जाए, उसे सम्प्रदान कहते हैं, सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है, यथा - भिक्षुकाय अन्नं देहि (भिखारी को अन्न दो) यहाँ भिक्षुक को अन्न दिया जाता है, इसलिए इसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।
नमः स्वस्ति आदि के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है,
जैसे :- श्रीगणेशाय नमः (गणेशजी को प्रणाम है)
लोकाय स्वस्ति (संसार का कल्याण हो) आदि।

चतुर्थी विभक्ति

1. सम्प्रदान में - बालकः भिक्षुकाय वस्त्रं ददाति।
2. रुचि के अर्थ में - गणेशाय मोदकं रोचते।
3. नमः/स्वस्ति के साथ - गुरवे नमः।
4. क्रुध अर्थवाली धातुओं के साथ - गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
5. द्रुह अर्थ वाली धातुओं के साथ - मूर्खः पण्डिताय द्रुह्यति।

5. अपादानकारक :- जहाँ से कोई वस्तु अलग हो या उत्पन्न हो उसे अपादानकारक कहते हैं, अपादानकारक में पञ्चमी विभक्ति होती है।
पथा - वृक्षात् पत्रं पतति (पेड़ से पत्ता गिरता है) यहाँ वृक्ष से पत्ता अलग होता है, इसलिए वृक्ष में पञ्चमी विभक्ति हुई।

पञ्चमी विभक्ति :-

1. पृथक् अर्थ में - वृक्षात् फलानि पतन्ति।
2. भय के हेतु में - सिंहात् बिभेति।
3. उद्भवति / प्रभवति के साथ - गंगा हिमालयात् प्रभवति
4. निवारण अर्थ में - मित्रं पापात् निवारयति।

6. सम्बन्ध :- सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। पथा रामस्य पुस्तकम् अस्ति (राम की किताब है।)
यहाँ राम के साथ पुस्तक का सम्बन्ध है, इसलिए राम में षष्ठी विभक्ति हुई।

षष्ठी विभक्ति :-

1. तव घटिका - तुम्हारी घड़ी
2. मम गृहम् - मेरा घर
3. तस्य अश्व: - उसका घोड़ा
4. सीतायाः आभूषणं - सीता का गहना

7. अधिकरणकारक ⇒ आधार को अधिकरण कहते हैं। अधिकरणकारक में सप्तमी विभक्ति होती है।
यथा - पात्रे घृतम् अस्ति (बरतन में घी है)
यहाँ 'घृतं' का आधार पात्र है, इसलिए यह अधिकरण कारक हुआ तथा इसमें सप्तमी विभक्ति हुई।

सप्तमी विभक्ति :-

1. अधिकरण में - सिंहासने नृप: विराजते।
2. निर्धारण में - छात्रेषु राम: उत्तम:।
3. विषय में - अध्ययने रुचि:।

कारक के चिन्ह :-

| कारक | चिन्ह |
|---|---|
| कर्ता कारक | ने |
| कर्म कारक | को |
| करण कारक | से |
| सम्प्रदान कारक | के लिए |
| अपादान कारक | से |
| सम्बन्ध कारक | का, के, की / रा, रे, री |
| अधिकरण कारक | में पर |
| सम्बोधन | हे! अरे! |